निबन्ध : स्वरूप, परिभाषा एवं तत्व

डॉ. गरिमा तिवारी
(सहायक प्राध्यापक)
हिंदी विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी - ८४५४०१, बिहार
E-mail: garimatiwari@mgcub.ac.in

HIND3009: कथेतर हिंदी गद्य विधाएँ : एक

विषय-सूची

- निबन्ध का स्वरुप
- निबन्ध की परिभाषा
- निबन्ध के तत्व
- निबन्ध की विशेषताएँ
- निष्कर्ष

निबन्ध का स्वरुप

- निबन्ध हिंदी साहित्य के आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण गद्य विधा है।

- संस्कृत की प्रसिद्ध उक्ति “गद्य कविनां निकषं वदन्ति” के आधार पर हिंदी के ख्यातिलब्ध आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निबन्ध विधा के सम्बन्ध में कहा है कि –’यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है, तो निबन्ध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबन्धों में ही अधिक संभव है।’

- निबन्ध एक ऐसी विधा है जिसमें निबंधकार किसी विषय पर अपने विचारों एवं भावों की प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्ति करता है। इससे रचनाकार के व्यक्तित्व का भी प्रकाशन होता है। इसीलिए निबन्ध को आत्माभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम भी माना गया है।

- निबन्धों के जन्मदाता एवं फ्रेंच साहित्यकार मान्तेन कहते हैं कि “मैं अपने को ही निबन्धों में चित्रित करता हूँ।”

- निबन्ध में साहित्य की सभी विधाओं के कुछ महत्वपूर्ण तत्वों का समावेश रहता है। कविता की भावुकता, नाटक की प्रभावशीलता, गतिशीलता, रेखाचित्र की चित्रात्मकता, संस्मरण की विवरणात्मकता आदि तत्व निबन्ध विधा को गद्य साहित्य की कसौटी के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं।

- अतः निबन्ध गद्य साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली लेकिन अभिव्यंजना की दृष्टि से कठिन गद्य विधा है।

निबन्ध शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ

- निबन्ध शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है –

  नि + बन्ध + ल्युट

  निबध्यते अस्मिन इति, अधिकरणे निबन्धम।

- 'नि' का अर्थ है भली-भांति या विशेष प्रकार से

- 'बन्ध' शब्द का अर्थ है – बांधना

- अर्थात् निबन्ध ऐसी रचना है जिसमें विचार विशिष्ट दृष्टि से प्रस्तुत किए जाते हैं।

- सामान्य शब्दों में कहें तो निबन्ध गद्य की ऐसी विधा है जिसमें निबंधकार अपने भाव या विचार को सुसंगठित, व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत करता है।

- अंग्रेज़ी में निबन्ध को 'ESSAY' कहते हैं जिसका अर्थ है 'प्रयास करना'।

निबन्ध की परिभाषा

- किसी भी साहित्यिक विधा को एक ऐसी परिभाषा में बांधना जिसमें उसके सभी तत्वों एवं पक्षों का समावेश हो, आसान नहीं।

- फिर भी भारतीय एवं पाश्चात्य विचारकों ने निबन्ध को परिभाषित करने का प्रयास किया है। उनके द्वारा दी गई परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं –

  - आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निबन्ध की विशेषता का उल्लेख करते हुए लिखा है – 'आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के आधार पर निबन्ध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्व अर्थात व्यक्तिगत विशेषता हो।'

  - डॉ. भगीरथ मिश्र के अनुसार, 'निबन्ध वह गद्य रचना है, जिसमें किसी विषय का श्रृंखलित विवेचन अथवा वैयक्तिक भाव या विचारधारा का क्रमबद्ध रोचक प्रकाशन प्रस्तुत किया जाता है।'

- सीताराम चतुर्वेदी के अनुसार, 'साधारणतः निबन्ध वह साहित्य रूप है जो न बहुत बड़ा हो, न बहुत छोटा हो, जो गद्यात्मक हो।'

- बाबु गुलाब राय के अनुसार, 'निबन्ध का आकार सीमित होता है, उसमें निजीपन होता है, स्वच्छ और सजीव होता है।'

- पंडित श्याम सुन्दर दास के अनुसार, 'निबन्ध वह लेख है जिसमें किसी गहन विषय पर विस्तारपूर्वक और पांडित्यपूर्ण ढंग से विचार किया गया हो।'

- पाश्चात्य विचारक जॉनसन के अनुसार – 'निबन्ध मन की उच्छश्रृंखल स्थिति की साहित्यिक अभिव्यक्ति है। इसमें विचारों की सुव्यवस्था अथवा श्रृंखला का महत्व नहीं होता।

- मान्तेन के अनुसार, 'मेरे निबंध मन की उच्छश्रृंखल उड़ान है। इनके द्वारा मैं अपने आपको खोलकर पाठकों के सामने रखने की चेष्टा करता हूँ।'

- एडिसन 'निबंधों में विचारों की तरलता को महत्व देते हैं और उन्हें गपशप के रूप में पाठकों के सामने रखने के पक्षधर हैं।'

- उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि निबन्ध एक ऐसी गद्य विधा है जिसमें निबंधकार किसी विषय पर अपने विचारों एवं भावों को अत्यंत रोचक और प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करता है।

निबन्ध के तत्त्व

- किसी भी विधा को सम्पूर्ण स्वरूप प्रदान करने वाले उसके तत्त्व ही होते हैं।

- निबन्ध के निम्नलिखित तत्त्व माने गये हैं –
  1. गद्यात्मकता
  2. लेखक के व्यक्तित्व का समावेश
  3. संक्षिप्तता
  4. रोचकता
  5. निजी अनुभूति का समावेश
  6. भाषा शैली

निबन्ध की विशेषताएँ

- निबंधकार निबन्धों के माध्यम से अपने व्यक्तित्व का प्रकाशन करता है।
- निबन्ध में विषय और आकार में एकरूपता होती है।
- निबंधों का विषय वैविध्यपूर्ण हो सकता है। यह निबंधकार के व्यक्तित्व पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार के विषय का चयन करता है।
- निबन्ध आकार में सीमित, क्रमबद्ध और सुव्यवस्थित होना चाहिए तभी वह प्रभावोन्विती में सफल हो सकता है।
- निबन्ध की भाषा शैली में प्रौढ़ता एवं प्रांजलता अपेक्षित है।
- निबन्ध निबंधकार के आत्माभिव्यक्ति का एक नवीन मार्ग है।

निष्कर्ष

- इस प्रकार हम कह सकते हैं कि निबन्ध आधुनिक युग की महत्वपूर्ण एवं सफल गद्य विधा है।
- निबन्ध में निबंधकार किसी भी विषय को अपने निजी चिंतन एवं अनुभूति से संपन्न कर अभिव्यक्त करता है।
- इस विधा में निबंधकार किसी विषय को क्रमबद्ध, सुन्दर, सुगठित एवं सुबोध भाषा में प्रस्तुत करता है।
- अतः निबन्ध साहित्य की अन्य गद्य विधाओं के समान ही एक महत्वपूर्ण गद्य विधा है।

धन्यवाद